Core-14

Q: श्रम के यौन विभाजन से आप क्या समझते हैं? इसके पीछे कौन सी विचारधारात्मक कल्पनाएँ हैं?

Ans - सामान्यतः स्त्री के एक विवाह करने की परम्परा बड़ी कठोरता से स्थापित है। इस पितृतंत्र के माध्यम से नारी की यौनता (Sexuality) पर नियंत्रण के अलावा नारी की श्रम शक्ति पर भी पुरुष का नियंत्रण होता है। परिवार के भीतर व बाहर नारी की उत्पादन क्षमता पर पुरुष का नियंत्रण होता है जो यह निर्णय करता है कि नारी घर से बाहर काम करे या नहीं। नारी की इस यौनता पर श्रम नियंत्रण बनाये रखने के लिए उन्हें उत्पादक संसाधनों की पहुँच तथा स्वामित्व से वंचित रखा जाता है जिससे वे पुरुष पर सम्पूर्ण तौर पर निर्भर हो जाती हैं।

समाज में पुरुषत्व के गुणों को नारीत्व के गुणों से श्रेष्ठ माना जाता है। श्रम के यौन विभाजन में कोई प्राकृतिक बात नहीं होती है। पुरुष और नारी परिवार के भीतर तथा बाहर जो अलग अलग कार्य करते हैं उनका जीव विज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है। गर्भवती होने की प्रक्रिया ही जीव-विज्ञानीय है तथा बाकी सभी कार्य जैसे खाना बनाना, सफाई करना व बच्चों की देखभाल करना आदि जो कार्य नारियाँ करती हैं वह पुरुष द्वारा भी समान रूप से किए जा सकते हैं। लेकिन यह कार्य केवल नारियों के कार्य माने जाते हैं। श्रम का यौन विभाजन केवल घर तक सीमित नहीं है यह सार्वजनिक क्षेत्र में भी जिन कार्यों में वेतन प्राप्त होता है लागू हो रहा होता है। यौन तथा लिंग में फर्क है। Sex & Gender is different. कुछ कार्य स्त्रियों के बहुत सारे कार्यों का सम्बन्ध संस्कृति के साथ है। नारियों के कार्य माने जाते हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि नारी जो भी कार्य करती है उसके लिए उसे कम वेतन मिलता है और उनके कार्य का मूल्यांकन भी कम आंका जाता है। नर्सिंग को मुख्य रूप से नारी व्यवसाय माना जाता है।

श्रम के यौन विभाजन के पीछे कोई प्राकृतिक जीव-विज्ञानीय विभेद नहीं है बल्कि उसके पीछे कुछ विचारधारात्मक कल्पनाएँ हैं। एक तरफ से नारियों को शारीरिक रूप से कमजोर और स्त्रैण और इसी और भारी शारीरिक श्रम के अयोग्य माना जाता है और इसी और

Bhagyalaxmi
27.3.20

वे घर के भीतर और बाहर के सारे भारी कार्य जैसे अनाज पीसना, पानी ढोना लकड़ी लाना धान रोपण आदि करती हैं। लेकिन जब शारीरिक कार्य का मशीनीकरण हो जाता है तो कार्य हल्का और बेहतर वेतन प्राप्ती का माध्यम बन जाता है और फिर उस कार्य में नारियों को शामिल नहीं किया जाता। यह न सिर्फ कारखानों में होता है बल्कि समुदाय में भी होता है। उदाहरण जब हाथ चक्की की जगह बिजली वाली चक्की आ गई तो पुरुष ही इन कार्यों के लिए प्रशिक्षित हुए।

दूसरे शब्दों में नारियों की वर्तमान अधीनस्थ स्थिति का कारण अपरिवर्तनीय जीव विज्ञानीय विभेद (यानि नहीं बदलने वाले शारीरिक अंतर) नहीं हैं बल्कि सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्य विचारधाराएँ तथा संस्थाएँ हैं जो कि नारी के लिए ऐसी स्थिति का निर्माण करती है कि उनकी भौतिक तथा विचारधारात्मक अधीनस्थता सुनिश्चित होती है।

एंगल्स का कहना था कि हम नारी के घरेलू कार्य को निजी सेवा के क्षेत्र में रखते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र का न होने के कारण इस पर सरकारी नियमन कार्य नहीं करते। यहीं नारी का दमन प्रारम्भ हो जाता है। निजी दमन का क्षेत्र है और जब महिला उत्पादन के सार्वजनिक क्षेत्र में उतरेंगी केवल तभी उनकी वास्तविक मुक्ति होगी।

(signature)
27.3.20